तामस राजस स्वांतस, चलें माहें गुन तीन।
वचन अनुभव इस्क, हुआ जाहेर आकीन।। १७ ।।

सात्विक, राजस और तामस तीनों गुणों में आत्माएं हैं। इनके वचनों के अनुभव और इश्क से उनके यकीन की जाहिरी पहचान होती है।

हंसे खेले बिध तीन में, छोड़ें देह सुपन।
महामत कहें सुख चैन में, धनी साथ मिलन।। १८ ।।

परमधाम की ब्रह्मसृष्टि हंसते-खेलते तीनों तरह से अपने शरीर से धनी से मिलने और अखण्ड सुख को प्राप्त करने के लिए तीन तरह से शरीर छोड़ेगी।

॥ प्रकरण ॥ ८५ ॥ चौपाई ॥ ११९४ ॥

राग श्री

साथ जी जागिए, सुनके सब्द आखिर।
सकल आउध अंग साज के, दौड़ मिलिए धनी निज घर।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! आखिरत की इस वाणी को सुनकर जागृत हो जाओ और (जोश और इश्क के) अस्त्रों से सजो और दौड़कर अपने घर परमधाम में अपने धनी से मिलो।

धनी के केहेलाए मैं कहे, तुमको चार सब्द।
किन ज्यादा किन कम लिए, किन कर डारे रद।। २ ।।

धनी के हुकम से ही मैंने तुमको चार वचन जागृत होने के लिए कहे। इन्हें किसी ने ज्यादा और किसी ने कम लिया। किसी ने तो ग्रहण ही नहीं किए।

किन कम किन ज्यादा जीतिया, कोई हाथ पटक चल्या हार।
साथ जी यों बाजी मिने, कोई जीत्या बेसुमार।। ३ ।।

किसी ने कम और किसी ने ज्यादा लेकर बाजी जीती और कोई हाथ पटकते ही रह गए। हे सुन्दरसाथजी! इस खेल की बाजी में कोई (ब्रह्मसृष्टि) ही बेशुमार जीती।

अब सो समया आए पोहोंचिया, मेरे तो लेना सिर।
धनिएं बानी करता मुझे किया, सो मैं मुख फेरों क्यों कर।। ४ ।।

अब वह समय आ गया है जब मुझे धनी के वचनों को सिर चढ़ाना है। धनी ने वाणी कर्ता मुझे बनाया, तो इससे मैं पीछे कैसे हट सकती हूं?

कोई सिर ल्यो तो लीजियो, धनिएं केहेलाए साथ कारन।
न तो मेरे सिर जरूर है, एही सब्द बल वतन।। ५ ।।

हे सुन्दरसाथजी! कोई लेना चाहो तो ले लो। धनी ने सुन्दरसाथ के वास्ते ही यह वाणी कहलवाई है। नहीं तो मुझे अवश्य अमल में लेना है क्योंकि यह वाणी ही घर (परमधाम) की ताकत है।

ए नीके मैं जानत हों, करी है तुम पेहेचान।
तुममें विरला कोई पीछे पड़े, आखिर ल्योगे सिर निदान।। ६ ।।

यह मैं अच्छी तरह जानती हूं कि तुमको वाणी की पहचान अच्छी तरह से है। तुममें से शायद ही कोई पीछे रहेगा, क्योंकि अन्त में घर जाने के लिए इसे लेना ही पड़ेगा।

Nijanand App

मेरे तो आगूं होवना, धनिएं दिया सिर भार।
समझ सको सो समझियो, कर आतम अंतर विचार।।७।।

धनी ने यह जिम्मेदारी मेरे सिर सौंपी है, इसलिए मुझे तो आगे होना ही है। इसलिए आत्मा के अन्दर विचार के समझ सको तो समझ लेना।

अब मैं दिल विचारिया, लिया न सिर सब्द।
तो झूठी देह लग रही, जो बांधी माहें हद।।८।।

अब मैंने दिल से समझ लिया है कि इन वचनों को रहनी में न लेने से ही मैं माया के संसार में झूठा तन धारण किए बैठी हूं।

एक सब्द जो जाग्रत, अंतर आतम चुभाए।
तो ए देह झूठी सुपन की, तबहीं देवे उड़ाए।।९।।

वरना तारतम वाणी का एक वचन भी यदि आत्मा के अन्दर चुभ जाए तो यह सपने का झूठा तन तुरन्त ही समाप्त हो जाएगा।

आगूं जाग्रत वचन के, क्यों रहे देह सुपन।
मोहे अचरज आगूं सांच के, देह झूठी राखी किन।।१०।।

तारतम वाणी के वचनों के आगे सपने की झूठी देह कैसे रह सकती है? मुझे बड़ी हैरानी होती है कि सत के आगे झूठी देह को किसने कायम रखा?

ए भी फेर विचारिया, सांच आगे न रहे अनित।
एह बल हुकम के, देह सुपन रही इत।।११।।

मैंने यह भी विचार कर देखा कि सच्ची तारतम वाणी के आगे झूठी देह नहीं रह सकती, परन्तु यह हुकम की ताकत से ही खड़ी है।

सोई हुकम आए पोहोंचिया, जो करी थी सरत।
सब्द भी सिर पर लिए, आया वतन बल जाग्रत।।१२।।

वह हुकम जिसका वायदा किया था, अब आ गया हमने भी अब तारतम वाणी को रहनी में (सिर पर) ले लिया और अब परमधाम की शक्ति प्राप्त हो गयी।

अब हुकम धनीय के, सब बिध दई पोहोंचाए।
चेत सको सो चेतियो, लीजो आतम जगाए।।१३।।

अब धनी के हुकम से ही, हे साथजी! मैंने हर तरह से यह ज्ञान तुम्हें पहुंचाया। अब चेत सको तो चेतो (पहचान सको तो पहचान करो) और अपनी आत्मा को जगा लो।

अब भली बुरी इन दुनीय की, ए जिन लेओ चित ल्याए।
सुरत पकी करो धाम की, परआतम धनी मिलाए।।१४।।

अब किसी ने भला किया या बुरा किया, इसको भूल जाओ और अपनी आत्मा को दृढ़कर धनी से मिला दो।

दुख सुख डारो आग में, ए जो झूठी माया के।
पिंड ना देखो ब्रह्मांड, राखो धाम धनी सुरत जे।।१५।।

झूठी माया के दुःख और सुख को आग में डाल दो। अपने शरीर और संसार के लोगों को भुला दो। आत्मा को धनी के चरणों में लगा दो।

Nijanand App

कोई देत कसाला तुमको, तुम भला चाहियो तिन।
सरत धाम की न छोड़ियो, सुरत पीछे फिराओ जिन।। १६ ।।

ऐसा करने में यदि कोई तुमको कष्ट पहुंचाता है तो तुम उसका भला ही सोचना (अनदेखा करना)। परमधाम में एक दूसरे को जगाने वाले वायदे को नहीं छोड़ना और अपनी सुरता को भी माया में नहीं लगाना।

जो कोई होवे ब्रह्मसृष्ट का, सो लीजो वचन ए मान।
अपने पोहोरे जागियो, समया पोहोंच्या आन।। १७ ।।

जो कोई ब्रह्मसृष्टि हो, मेरे इन वचनों को मानना। अब समय जागने का आ गया है। हमको अपने समय पर जागना है।

सूता होए सो जागियो, जाग्या सो बैठा होए।
बैठा ठाढ़ा होइयो, ठाढ़ा पांउ भरे आगे सोए।। १८ ।।

जो अभी भी माया में भूले हों, इन वचनों से जागृत हो जाएं। जो जागृत हो गए हैं वह सावचेत (सावधान) होकर इन वचनों पर विचार कर बैठ जाएं और जो जागृत होकर बैठ गए हैं वह खड़े हो जाएं। जो जागृत होकर खड़े हो गए हों, वह सुन्दरसाथ को जगाने के कार्य में आगे बढ़ें।

यों तैयारी कीजियो, आगूं करनी है दौड़।
सब अंग इस्क लेय के, निकसो ब्रह्मांड फोड़।। १९ ।।

इस तरह से सभी मिलकर तैयारी करो और अपने रोम रोम में धनी का इश्क लेकर इस माया के ब्रह्माण्ड को उलंघकर आगे परमधाम की तरफ दौड़ो।

महामत कहें मेरे साथ जी, लीजो आखिर के वचन।
हुकम सरत पोहोंची दया, कछू अंग अपने करो रोसन।। २० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे सुन्दरसाथजी! इन आखिर के वचनों पर अमल करो। अब श्री राजजी महाराज की मेहर, हुकम और समय आ गया है। तुम भी कुछ अपना कार्य करके दिखाओ।

।। प्रकरण ।। ८६ ।। चौपाई ।। १२१४ ।।

राग श्री

आग परो तिन कायरों, जो धाम की राह न लेत।
सरफा करे जो सिर का, और सकुचे जीव देत।। १ ।।

ऐसे कायर भाड़ में जाएं जो धनी की इतनी मेहर से सब कुछ होने पर भी परमधाम के रास्ते पर आगे नहीं बढ़ते तथा अपने मिटने वाले तन से भी कुर्बानी करने में संकोच करते हैं।

पाइयत झूठ के बदले सत सुख अखंड।
सो देख पीछे क्यों होवहीं, करते कुरबानी पिंड।। २ ।।

ऐसे झूठे तन के बदले में सच्चे अखण्ड सुख मिलते हैं। यह जानकर के भी इस मिटने वाले तन की कुर्बानी करने में क्यों पीछे रहते हैं?

इन विध कहे संसार में, धनी रंचक दिलासा दे।
टूक टूक होए जाए फना, सब अंग आसिक के।। ३ ।।

संसार में ऐसा कहा जाता है कि माशूक जरा सा भी इश्क का इशारा करता है तो आशिक अपने तन को माशूक पर फना कर देता है।

Nijanand App